संविधान में वैदिक संस्कृति की छाप 07 | गुरु नानक देव जी की आध्यात्मिक यात्रा 08 | संघ का हरित कुंभ अभियान 12

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

मार्गशीर्ष कृ. अमावस्या, वि.2081, युगाब्द 5126, 1 दिसम्बर, 2024

39 वर्षों से निरंतर

2047 तक पूरी करनी है स्वाधीनता से स्वतंत्रता की यात्रा

सह सरकार्यवाह श्री अरुण कुमार एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान के कार्यक्रम में बोलते हुए
(बिड़ला सभागार, जयपुर 19 नवम्बर)

www.patheykan.com

patheykan@gmail.com @patheykanofficial @patheykanofficial @patheyofficial1 @patheykan

सह सरकार्यवाह जी ने किया पाथेय कण के 'महिला सम्मान एवं सुरक्षा' विशेषांक का विमोचन

उदयपुर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री अतुल लिमये ने गत 24 नवम्बर को उदयपुर में जागरण पत्रिका पाथेय कण के 'महिला सम्मान एवं सुरक्षा विशेषांक' का विमोचन किया। इस दौरान सह सरकार्यवाह के साथ मंच पर संघ के प्रांत संघचालक (चित्तौड़ प्रांत) श्री जगदीश सिंह राणा, स्वदेशी जागरण मंच के स्वावलंबी भारत अभियान के अखिल भारतीय समन्वयक डॉ.भगवती प्रकाश शर्मा, राष्ट्र सेविका समिति की प्रांत संयोजिका रीना शुक्ला और विभाग संयोजिका महिला समन्वय रूचि श्रीमाली भी उपस्थित रहे।

अजमेर

27 नवम्बर को अजमेर स्थित आदर्श विद्या निकेतन में पाथेय कण के विशेषांक का विमोचन लेखिका डॉ.प्रतिभा शास्त्री, उप रजिस्ट्रार सहकारिता विभाग, राज.सरकार, डॉ. सुमन बाला, आचार्य हरिभाऊ उपाध्याय बीएड कॉलेज, हटुन्डी, विद्यालय के प्राचार्य तथा विभाग प्रचार प्रमुख एवं महानगर प्रचार प्रमुख द्वारा किया गया।

नागौर

26 नवम्बर को नागौर जिला कलेक्टर श्री अरुण कुमार पुरोहित द्वारा पाथेय कण के महिला सम्मान एवं सुरक्षा विशेषांक का विमोचन किया गया।

जयपुर में हुआ विमोचन

जयपुर में पाथेय कण के इस विशेषांक का विमोचन तीन विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में किया गया।

18 नवम्बर को पाथेय भवन में पाथेय कण संस्थान की साधारण सभा में संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम द्वारा विमोचन किया गया। इस अवसर पर मंच पर संस्थान के अध्यक्ष प्रो.नन्द किशोर पांडेय, सचिव श्री महेन्द्र सिंघल, वीएसके फाउंडेशन की निदेशक डॉ.शुचि चौहान व संपादक श्री रामस्वरूप अग्रवाल भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में जयपुर प्रांत प्रचारक बाबूलाल जी व संस्थान के संरक्षक माणक जी सहित संस्थान की साधारण सभा के सदस्यगण उपस्थित थे।

17 नवम्बर को पाथेय भवन में ही आयोजित विश्व हिंदू आर्थिक मंच के कार्यक्रम में विश्व हिंदू फाउंडेशन के संस्थापक तथा वैश्विक अध्यक्ष स्वामी विज्ञानानंद जी द्वारा संपर्क विभाग के कार्यकर्ताओं व शहर के औद्योगिक-व्यापारिक क्षेत्र के गणमान्य लोगों के मध्य विमोचन किया गया। कार्यक्रम में संघ के सह क्षेत्र सम्पर्क प्रमुख योगेन्द्र जी व प्रबंध संपादक ओमप्रकाश जी भी उपस्थित थे।

(तीसरे विमोचन कार्यक्रम का समाचार पृष्ठ 9 पर देखें)

पाथेय कण

मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या से मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा तक
विक्रम संवत 2081
युगाब्द 5126
01-15 दिसम्बर, 2024
वर्ष : 40 अंक : 16

सम्पादक : रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक : मनोज गर्ग
प्रबंध सम्पादक : ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक : श्याम सिंह
अक्षर संयोजन : कौशल रावत

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)
E-mail : patheykan@gmail.com

पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक: माणकचन्द

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर प्रात: 10 से सायं 5 बजे तक संपर्क करें- 79765 82011 इसके अतिरिक्त समय में वाट्सएप व मैसेज करें अथवा ईमेल पर जानकारी दें। (अति आवश्यक होने पर मो.न. 9166983789 पर मोहित जी से संपर्क कर सकते हैं)

हिंदू समाज को तोड़ने के दुष्ट इरादों को ध्वस्त करता चुनाव परिणाम

महाराष्ट्र के विधान सभा चुनाव परिणामों ने न केवल सारे पूर्वानुमान और एक्जिट पोल्स ध्वस्त कर दिए वरन नए नैरेटिव स्थापित करते भी दिखाई दे रहे हैं।

1.) 'झूठ' चाहे कितने ही जोर से बोला जाए, अंततः झूठ का पर्दाफाश होता ही है। राहुल गांधी, तेजस्वी, केजरीवाल, और अखिलेश ब्रिगेड ने संसद में, संसद के बाहर व चुनाव सभाओं में, हर कहीं हाथ में संविधान की पुस्तक लहराते हुए बार-बार कहा कि भाजपा (और संघ) संविधान को नष्ट करना चाहते हैं और यह भी कि ये लोग आरक्षण को समाप्त करना चाहते हैं। उनके इस झूठ का असर लोकसभा चुनावों में कहीं-कहीं दिखाई दिया था, परंतु हरियाणा और महाराष्ट्र के मतदाताओं ने इसका जवाब भाजपा को अप्रत्याशित रूप से विजयी बनाकर दिया। इससे पूर्व भी राहुल गांधी के 'चौकीदार चोर है' तथा 'सूट-बूट की सरकार' जैसे झूठ चल नहीं पाए थे।

2.) महाराष्ट्र 'हिंदू पद-पादशाही' की स्थापना करने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज की भूमि है। उनके पद्चिह्नों पर चलने वाले बाला साहेब ठाकरे, जिन्हें 'हिंदू हृदय सम्राट' कहा गया, ने शिवसेना का गठन कर 'हिंदुत्व' का उद्घोष किया था। परंतु उनके पुत्र उद्धव ठाकरे ने सत्ता के लिए अपने पिता के दिखाए हिंदुत्व के मार्ग को छोड़कर हिंदू विरोधी कांग्रेस के साथ हाथ मिला लिया। लोकसभा चुनावों में उद्धव की अपने पिता के नाम पर की गई भावुक अपील का असर दिखा, परंतु सत्य को प्रकट होने से कौन रोक सकता है? इस बार के चुनावों में हिंदुत्व विरोधी ताकतों के साथ उद्धव ठाकरे गुट भी चारों खाने चित्त होते दिखा। महाराष्ट्र के मतदाताओं ने हिंदुत्व और विकास के पक्ष में मतदान किया।

3.) पाकिस्तान के निर्माण के बाद स्वाभाविक रूप से इस देश में हिंदुत्व के इर्द-गिर्द ही सारा ताना-बाना बुना जाना था। परंतु स्वाधीनता के बाद सत्ता में आए दल की नीति अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए 'मुस्लिम तुष्टिकरण' व 'हिंदुत्व विरोध' की रही (संविधान में हिंदू शब्द का प्रयोग भारत में जन्में सभी मत, संप्रदायों के लिए किया गया है)। सत्ता के लिए ही उस दल के नेताओं ने देश का विभाजन स्वीकार किया था (जिसके पर्याप्त साक्ष्य हैं)। बहुसंख्यक हिंदू समाज हक्का-बक्का सा रह गया था। क्या करें, क्या न करें, शायद इसी उहापोह में समय निकलता रहा।

राजनीतिक दलों ने अपने स्वार्थ के लिए हिंदू समाज की एकता को जातियों या वर्गों में बांटकर तोड़ना शुरू कर दिया। जीत के लिए तरह-तरह के फार्मूले आते रहे। सपा ने कभी एमवाई (यानी मुस्लिम व यादव) की बात की तो कभी पीडीए (यानी पिछड़ा, दलित व अल्पसंख्यक) की बात की। लालू- तेजस्वी की आरजेडी पार्टी ने एमवाई (मुस्लिम व यादव) के बाद बीएपी (बहुजन, अल्पसंख्यक, पिछड़े) का नारा दिया। बसपा ने 'दलित, मुस्लिम व ब्राह्मण' पर जोर दिया।

सभी दलों के फार्मूलों में मुसलमानों के साथ हिंदू समाज की कोई एक जाति या वर्ग को जोड़ा गया। मुसलमानों की एकजुटता तथा हिंदू समाज को जाति या वर्गों में तोड़ने पर ही इन फार्मूलों की सफलता निर्भर थी। हरियाणा में कांग्रेस ने किसान आंदोलन व अग्निवीर योजना के नाम पर जाटों को तथा महाराष्ट्र में आरक्षण के नाम पर मराठों को हिंदू समाज से अलग करने का प्रयास किया जबकि भाजपा ने हिंदू समाज की एकता पर जोर दिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'सबका साथ सबका विकास' का नारा दिया था? व्यवहार में उन्होंने इसे कार्यान्वित भी किया। सरकारी योजनाओं का लाभ हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सबको मिला न? आम मुस्लिम समाज के लोग मोदी के समर्थन में भी आए होंगे परंतु कट्टरपंथी मुस्लिम नेतृत्व तो हिंदू-मुसलमानों को एक होने देने के बजाए, भारत में 'गजवा-ए-हिंद' की कार्ययोजना पर काम कर रहा है, 2047 तक देश को मुस्लिम राष्ट्र बनाने का प्रयास कर रहा है। हिंदुओं के धार्मिक जुलूसों पर अपने ही देश में पत्थरबाजी होती रही। मस्जिद में बदल दिए गए अपने मंदिरों को हिंदू वापस मांग रहा है तो उसका हर स्तर पर विरोध, हिंसा, अराजकता की जा रही है। ऐसे माहौल में योगी का 'बंटेंगे तो कटेंगे' का नारा हिंदुओं को जोड़ने का कार्य करता दिखाई दिया। इस भाव को प्रधानमंत्री मोदी के नारे 'एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे' ने प्राण वायु दी। परिणाम सबके सामने है।

मतदाताओं की सामूहिक प्रज्ञा ने हिंदू को बांटने की सारी कोशिशों को नकार दिया तथा इस देश के मूल विचार 'हिंदुत्व' और हिंदू समाज की एकता को अपना समर्थन दिया। यह भारतीय मतदाता के परिपक्व होने और देश की मूल-धारा को मजबूत करने की ओर इशारा है। इन चुनावों का संदेश स्पष्ट है-**अब भारत में चुनाव जीतने के लिए करनी होगी विकास के साथ विरासत की बात।**

-रामस्वरूप

2047 तक पूरी करनी है स्वाधीनता से स्वतंत्रता की यात्रा

सांस्कृतिक मार्क्सवाद एवं वैश्विक बाजारवाद के झूठे विमर्श का विचार के स्तर पर करना होगा सामना

19 नवम्बर, 2024 को 'एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान' द्वारा जयपुर के बिड़ला ऑडिटोरियम में आयोजित दीनदयाल स्मृति व्याख्यान के अंतर्गत संघ के सह सरकार्यवाह श्री अरुण कुमार ने खचाखच भरे सभागार को संबोधित किया। विषय था- 'वर्तमान परिदृश्य एवं चुनौतियां'। प्रस्तुत है श्री अरुण कुमार के दिए दिशाबोधक उद्बोधन के प्रमुख अंश :-

1947 में स्वाधीनता के साथ ही देश में परिवर्तन की जो यात्रा प्रारम्भ हुई है उसके तीन आयाम हैं। तंत्र, समाज और विचार। पिछले 75-78 वर्षों का एक गौरवशाली कालखंड रहा है। अब भारत विदेशी दबावों से मुक्त एक सशक्त राष्ट्र के रूप में उभरा है जिसकी स्वतंत्र विदेशी नीति, सुदृढ़ अर्थव्यवस्था और मजबूत सैन्य शक्ति है। सभी व्यक्तियों तक पानी, बिजली, आवास आदि मूलभूत सुविधाएं पहुँचाई जा रही हैं।

समाज के अंदर एक अद्भुत क्रांति हुई है। गांव से निकला सामान्य व्यक्ति अब प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति जैसे देश के शिखर पदों पर है। यह एक बड़ी सामाजिक क्रांति देश में हुई है।

समाज पराधीनता की मानसिकता से मुक्त, आत्मविश्वास से युक्त एक बड़ी उड़ान भरने को तैयार है। 1947 में जो यात्रा प्रारम्भ हुई थी वह दक्षिण में स्वामी विवेकानन्द शिला स्मारक के निर्माण से होकर उत्तर में भगवान राम की जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण के साथ पराधीनता के प्रत्येक चिह्न को मिटाने के लिए तत्पर है।

यद्यपि समाज के केन्द्र में हिंदुत्व का विचार स्थापित होता जा रहा है तो भी विचार के क्षेत्र में अभी भी बहुत काम करना शेष है। 'विचार के क्षेत्र' में यात्रा पूरी करने के लिए तीन बातों पर चिंतन करना होगा- जिन शक्तियों से हमारा संघर्ष हुआ उनकी प्रेरणा क्या थी? आज इस आक्रमण या चुनौती का स्वरूप क्या है? तथा हमारा विचार क्या है, जिसे हमें स्थापित करना है? इसके लिए हमें क्या करना होगा?

आत्मसातीकरण की अद्भुत घटना

लगभग 1500 वर्ष पूर्व इस देश पर शक, हूण, कुषाण, ग्रीक आदि विदेशियों का आक्रमण हुआ। वे सत्ता के लिए, राज्य के लिए आए थे। हिंदू समाज ने न केवल उनका प्रतिकार किया वरन् उन्हें अपने में आत्मसात कर लिया। विश्व के इतिहास में यह आत्मसातीकरण की एक अद्भुत घटना भारत में घटी। हमने उनको अपने गोत्र दे दिए, अपने समाज का हिस्सा बना लिया। वे हमारे समाज में विलीन हो गए।

परंतु इनके बाद हुए मुस्लिम एवं यूरोपियन शक्तियों के आक्रमण सत्ता का साधारण संघर्ष नहीं था। उनके पीछे विचार व कुछ प्रेरणा थी। पूरी दुनिया में ये जहां भी गए उनकी भाषा, संस्कृति, समाज नष्ट हो गए। भारत मिटा नहीं, अजेय रहा। आज एक बार पुन: अपने मूल प्रवाह से जुड़ने को आतुर है अपनी पराधीनता के चिह्नों को दूर करते हुए।

इस्लाम से संघर्ष

इस्लाम का आक्रमण सत्ता के लिए नहीं था। मंदिरों को ध्वंस करना, माता-बहिनों पर अत्याचार, जबरन मतांतरण, हजारों-लाखों भारत के बेटे-बेटियों को गुलाम बनाकर विश्व के बाजार में बेचना, हिंदू को काफिर, धीमी समझना, जजिया कर लगाना- यह सब भारत के लिए नया था। इस्लाम के साथ संघर्ष के चार परिणाम हुए। 1. हमारी गुरुकुल जैसी संस्थाएं नष्ट हो गई। 2.बड़े-बड़े मंदिर समाप्त हो गए। 3. संस्कार व्यवस्था नष्ट हो गई। 4. हमारी मानसिकता पराभूत की हो गई। 'दिल्लीश्वरो या जगदीश्वरो'(दिल्ली का शासक ही भगवान है) या 'जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ' जैसी मानसिकता या विचार हमारा नहीं था। हम पुन: राज्य कर सकते हैं- यह आकांक्षा सामान्यजन में धुमिल होती जा रही थी।

इस संघर्ष के कारण समाज कई रूढ़ियों व कुरीतियों का शिकार हो गया। (घूंघट प्रथा, रात्रि में विवाह, बाल विवाह आदि)। समाज जातियों जैसी छोटी-छोटी पहचान में बंट गया। अस्पृश्यता व भेद पैदा हो गए। हम अपने मूल विचार से कट गए। कुरीतियां हमारे मूल विचार के विपरीत थीं। इस्लाम से संघर्ष करते हुए हम विजय प्राप्त करते जा रहे थे।

अंग्रेजी आक्रमण

अंग्रेज आश्चर्यचकित था कि 700-800 वर्षों तक इस्लाम के शासन के बाद भी हिंदू समाप्त नहीं हुआ है। उसको समझ

में आ गया कि यहां ताकत सत्ता में नहीं है। हिंदू विचार केवल शासन से समाप्त होने वाला नहीं है। अंग्रेजों के तीन हथियार थे - शिक्षा, विधिक ढांचा और प्रशासनिक व्यवस्था।

1835 में अंग्रेजी शिक्षा शुरु की। अंग्रेजी पढ़े-लिखों को नौकरी दी जाने लगी। इससे समाज अपनी भाषा व ज्ञान परंपरा से कट गया। समाज आत्मविस्मृति से ग्रसित होने लगा।

हमारे यहां जातियां नहीं थी। एससी-एसटी जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी। हमारे यहां कम्युनिटी थी। हम हमारे मूल से काट दिए गए। हम अपनी संस्कृति से कट गए। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि अंग्रेजों ने अंग्रेजी स्कूल जा रही पीढ़ी को समझाया कि तुम्हारे माता-पिता झूठे हैं दादा-दादी सनकी हैं, जो स्कूल की टीचर कहती है वही सही है। लाला लाजपत राय के शब्दों में अंग्रेजों ने हमारा अहिन्दुकरण, अराष्ट्रीयकरण और असामाजीकरण कर दिया। मूल से काटने के लिए 'आर्य बाहर से आए' का सिद्धान्त दिया गया। यहां अनेक राज्य थे परंतु भाषा के आधार पर कोई राज्य नहीं था।

कल्चरल मार्क्सिज्म व ग्लोबल मार्केटिंग

गत 100 वर्षों में विश्व में दो विचार चले। एक कम्युनिज्म (साम्यवाद) का विचार जो अब कल्चरल मार्क्सिज्म (सांस्कृतिक मार्क्सवाद) के रूप में है तथा दूसरा ग्लोबल मार्केटिंग (वैश्विक बाजारवाद) का। आज सबसे अधिक प्रभाव इन दो विचारों का है। हमें इनसे वैचारिक स्तर पर लड़ना होगा। ये राष्ट्रवाद एवं हिंदुत्व को खत्म करना चाहते हैं। हिंदुत्व ने ही भारत को जोड़ रखा है। उन्होंने समाज में विभेद खड़े करना शुरू किया। महिलाएं माथे पर बिंदी क्यों लगाती हैं ? पुरुष क्यों नहीं लगाते? विवाह क्यों? लिव इन रिलेशन ही सही है। बहिन भाई के राखी क्यों बांधती है? क्या बहिन कमजोर है? उन्होंने नेतृत्व व संस्थाओं के प्रति अनास्था पैदा करना शुरु किया। संन्यासियों के प्रति आस्था समाप्त करो। कहीं भी कोई कमी हो तो उसे उजागर करो। समाज में अराजकता पैदा करो। ये सब बातें उनके हथियार हैं।

इसके कारण हम लोगों को अपने प्रति ही विश्वास समाप्त हो गया। मूल से कटने के कारण हमारी पहचान का संकट खड़ा हो गया। हमारे यहां धर्म की, ब्रह्मचर्य की बातें होती थी। आज ये जीवन मूल्य बदल गए। अब अधिकारों की बात होती है। मेरे शरीर पर मेरा अधिकार है। मुझे क्या करना है, क्या खाना है कहां जाना है- इन सब का फैसला मैं करूंगा।

ये अपने विचार का रेफेरेंस (संदर्भ) तैयार करते हैं। उसके आधार पर नैरेटिव (विमर्श) पैदा करते हैं और फिर राष्ट्र की संस्कृति को खत्म करते हैं।

भारत ने आदर्श जीवन की व्याख्या रामचरितमानस के आधार पर की, तो कहा गया कि यह राम कौन है, ये तो काल्पनिक है। ये सिलेक्टिव नैरेटिव (चयनित विमर्श) पैदा करते हैं। उस नैरेटिव के आधार पर लोगों में भ्रम पैदा करते हैं। उसके लिए लेखन, भाषण, चर्चाएं करते हैं। ऐसे विचारकों को सम्मानित करना और इन सभी का मैसेज सोशल मीडिया के माध्यम से आम समाज में फैलाया जाता है। अब तो रावण का पुतला फूंकने में भी कुछ लोग विरोध करते हैं कि रावण महाज्ञानी था। ये लोग कभी किसान के नाम पर, कभी सीएए के नाम पर देश के लोगों को गुमराह करते हैं।

अपघातियों की व्यूह रचना

पिछले 10-15 वर्षों में इन लोगों ने बहुत बड़ा इको सिस्टम (पारितंत्र) खड़ा किया है। उसके आधार पर लड़ाई लड़ रहे हैं। भारत में इस विचार के तीन समान शत्रु हैं, पहला भारत, दूसरा हिंदू और तीसरा संघ। संघ के कारण देश में बढ़ता हुआ देश भक्ति का भाव, समाज में संगठन के प्रति बढ़ता विश्वास तथा हिंदुत्व को जानने, पहचानने और उसके अनुसार जीने की बढ़ती प्रबल इच्छा। यह सारी बातें जो देश में बढ़ रही हैं, ये उनको चुनौती दे रही हैं इसलिए इन्होंने तीन तरह की लड़ाइयां शुरु कर दी हैं। नैरेटिव गढ़ना, ग्राउंडबेस मूवमेंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया मूवमेंट।

नैरेटिव के आधार पर संघर्ष में किसी पर भी आप कोई एक बात चिपका दीजिए। उसका कोई आधार होना जरूरी नहीं है। फिर उसको लगातार बोलते जाइए। जैसे कि 'संघ संविधान को नहीं मानता', राष्ट्रध्वज को नहीं मानता, इस तरह की बात लगातार बोलते जाइए और एक नैरेटिव खड़ा कर दीजिए। देश को एक विचार दे दीजिए कि यह देश भक्ति का विचार, आतंकवाद का विचार है, हिंदी को अन्य भाषाओं पर थोप रहे हैं। ये हिंदुत्ववादी ब्राह्मणवादी हैं, मनुवादी हैं। भेदभाव पूर्ण व्यवस्था पुनः लाना चाहते हैं। हजारों वर्षों से शिष्य का आदर्श एकलव्य बना रहा। वो कथा अब जनजाति के साथ भेदभाव की हो गई।

हमारी रणनीति

भारत की स्वतंत्रता की प्रेरणा मात्र स्वाधीनता नहीं थी। स्वाधीनता से आगे 'स्व' धर्म है जिसके लिए हमने संघर्ष किया। यदि इस सारे संघर्षों पर विजय प्राप्त करना है तो तीन स्तर पर काम करना पड़ेगा।

हजार वर्षों के संघर्ष काल में जो कुरीतियां आ गई हैं उन्हें मिटाना पड़ेगा। समाज में से भेदभाव हटाना, सब प्रकार

के दिखावा और फिजूलखर्ची बंद करना होगा।

हमें अपने 'स्व' की स्पष्टता होनी चाहिए। सारे समाज की एकात्मता, समाज में बढ़ता हुआ हिंदुत्व का प्रभाव, अपने संगठनों के प्रति विश्वास आदि आवश्यक है। विरोधी शक्तियों के षड्यंत्र का स्वरूप, उनकी रणनीति और उनका पारितंत्र समझ कर हमें अपना पारितंत्र खड़ा करना पड़ेगा।

हमारे देश में दो नेतृत्व काम कर रहे हैं। समाज का नेतृत्व पूजनीय सरसंघचालक जी और देश के स्तर पर माननीय प्रधानमंत्री जी। प्रधानमंत्री जी ने अपने संबोधन में स्पष्ट कहा है कि यह भारत का अमृतकाल (2047 तक) चल रहा है। आने वाले 25 वर्षों में भारत सूर्य की भांति चमकता हुआ प्रकट होगा तथा पूरी दुनिया को प्रकाशित करेगा। हमें गुलामी की मानसिकता से रहित अपने गौरव की पहचान करनी होगी। सब प्रकार के भेदों से उठकर एक राष्ट्र-एक जीवन ही हमारी पहचान होनी चाहिए।

पूजनीय सरसंघचालक जी ने कहा है कि आज से 75 वर्ष पूर्व हमें स्वाधीनता मिली थी, स्वतंत्रता नहीं। हमने 75 वर्ष पूर्व स्वाधीनता से स्वतंत्रता की यात्रा प्रारंभ की थी। यह यात्रा आने वाले 25 वर्षों में पूर्ण करनी है। भारत को 'स्व' के आधार पर बनाना है। देश को बदलना है तो व्यक्ति को पहले बदलना होगा। सामाजिक समरसता युक्त समाज, मूल्य आधारित समाज खड़ा करना है। कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण पर ध्यान देना होगा। जीवन शैली पर्यावरण केन्द्रित करनी होगी। स्वदेशी का भाव राष्ट्र के प्रत्येक जीवन में आना चाहिए। नागरिकों को अपने कर्त्तव्य के प्रति प्रतिबद्ध होना है। यह जो स्वाधीनता से स्वतंत्रता की यात्रा पूरी करनी है हमें आने वाले 25 वर्षों में तीन काम करने होंगे- समाज का आचरण व स्वभाव बदलना, विमर्शों की स्पष्टता और युगानुकूल समाज व्यवस्थाओं का निर्माण ।

विषय की प्रस्तावना

डॉ. महेश शर्मा ने आरंभ में विषय की प्रस्तावना रखते हुए कहा कि नागरिकता और राष्ट्रीयता एक नहीं होती है। जरूरी नहीं कि जो किसी देश का नागरिक है, वह वहां का राष्ट्रीय भी हो। फ्रांस में सात फीसदी लोग माइग्रेटेड मुसलमान हैं, वहां के लोगों को समस्या खड़ी हो रही है। अमेरिका के चुनाव में भी माइग्रेशन बड़ा मुद्दा रहा, माइग्रेशन के कारण दुनिया भर में समस्या खड़ी हुई है। इस समस्या का निदान पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का सिद्धांत है। भारत जैसे देश में जहां भारत माता की जय और वंदेमातरम का नारा सबके हृदय का स्वर है, लेकिन ऐसे भी लोग होते हैं जो भारत तेरे टुकड़े होंगे, इंशा अल्लाह, बोल सकते हैं। वे जिस कारण ऐसा बोल सकते हैं, उसे समझने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में राजस्थान के मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री सहित मंत्रिमंडल के कई सदस्य, संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम सहित संघ के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में शहर के गणमान्य लोग उपस्थित थे। ■

150वें जयंती वर्ष (15 नवम्बर) पर विशेष

भगवान बिरसा मुण्डा : संघर्ष, बलिदान और प्रेरणा

● **राम कुमार सिंह**

भारत वर्ष के विभिन्न प्रांतों में बसी लगभग 750 जनजातियाँ जब अपने सपूतों की गौरव गाथा को याद करती है, तो एक स्वर्णिम नाम उभरता है -'बिरसा मुण्डा' जिसे आदिवासी-वनवासी बंधु बड़े प्यार से और श्रद्धा के साथ 'धरती आबा- भगवान बिरसा मुण्डा' के रूप में नमन करते हैं। संसद भवन में लगा बिरसा मुण्डा का तैल चित्र और संसद परिसर में लगी उनकी मूर्ति जन-जन को याद दिलाती है कि अल्प शिक्षा, सीमित साधन और आधुनिक सुविधाओं के अभाव के बावजूद आदिवासी समाज ने देश को अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाने के लिए कम योगदान नहीं दिया है। जब तिलक का ''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' का मंत्र देश में गूंजा भी नहीं था, न ही गाँधी और सुभाष का नाम राजनीतिक पटल पर आया था, तब झारखंड के छोटानागपुर के पिछड़े आदिवासी इलाके में आजादी का शंखनाद और ब्रिटिश सत्ता को बिरसा मुण्डा ने चुनौती दी।

छोटानागपुर की धरती ने 15 नवम्बर, 1875 के दिन इस लाल को जन्म दिया। खूंटी थाना के उलिहातु गाँव में बृहस्पतिवार के दिन जन्म लेने के कारण इनका नाम बिरसा पड़ा। पिता सुगना मुण्डा और माता करमी हातु अत्यंत निर्धन परंतु परिश्रमी थे। माता ने खेत में काम करते हुए ही पुत्र को जन्म दिया था और कपड़े के अभाव में पलाटी पत्ते में लपेट कर घर ले आई थी। इनके दो भाई और दो बहने थीं। बिरसा के पिता उनको पढ़ा-लिखा कर 'बड़ा साहब' बनाना चाहते थे।

बिरसा के पिता ने उन्हें मामा के घर भेज दिया जहाँ बिरसा ने भेड़-बकरियाँ चराते हुए शिक्षक जयपाल नाग से अक्षर ज्ञान और गणित की प्रारंभिक शिक्षा पाई। यहीं पर वे ईसाई धर्म प्रचारक के संपर्क में आए और निर्धनता एवं शिक्षा प्राप्त करने की चाह में उनके परिवार ने ईसाइयत को अपनाया। बिरसा ने ग्यारह वर्ष की आयु में बपतिस्मा लिया और उनका नाम दाऊद पूर्ति तथा पिताजी का नाम मसीह दास रखा गया। उन्होंने बुर्जू के स्कूल में प्राथमिक शिक्षा पाई और आगे की पढ़ाई के लिए चाईबासा के लुथरन मिशन स्कूल में दाखिल हुए। चाईबासा स्कूल मिशनरियों का होने के कारण वहाँ बाइबल शिक्षा पर जोर दिया जाता था । छात्रावास में गोमांस दिया जाता था, मुण्डा परिवार जहाँ बिरसा का बचपन बीता, वहाँ गौ पूजन का विधान था और गोमांस खाना उनकी कल्पना से भी परे थी। बिरसा ने गोमांस खाने से इंकार कर दिया और अपने सहपाठियों को भी इससे परहेज करने के लिए कहा। यह बात जब स्कूल प्रबंधकों तक पहुँची तो बिरसा को फटकार मिली और स्कूल से निकाले जाने की धमकी भी दी गई। मुण्डा जनजाति में शिखा (चोटी) रखने की परंपरा है। जब एक दिन एक सहपाठी ने पीछे से उनकी शिखा कतर डाली तो उनका हृदय हाहाकार कर उठा, आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। स्कूल में मुण्डा लोगों को राक्षसी

स्वभाव का बताना तथा उनकी सनातन परंपराओं का उपहास उड़ाना उनको सहन नहीं हुआ । बिरसा ने पादरी नट्राटे से कहा, ''साहब - साहब एक टोपी हैं'' यानि अंग्रेज पादरी और अंग्रेजी शासक एक ही हैं। बिरसा ने यह संकल्प लिया कि वह एक भी क्षण चाईबासा में नहीं रुकेगा।

बाद में वे बंदगाँव आए तथा वहाँ उनकी भेंट वैष्णव धर्मावलंबी आनंद पाण्डे से हुई। जिनसे उन्होंने रामायण, महाभारत, हितोपदेश आदि के बारे में जाना और आगे चलकर उन्होंने मांस खाना छोड़ दिया, वे जनेऊ पहनने लगे, सर पर पीली पगड़ी बाँधने लगे और तुलसी की पूजा करने लगे। अपने समाज के पिछड़ेपन और अज्ञानता को खत्म करने के लिए उन्होंने दृढ़ संकल्प लिया। आदिवासी समाज को विदेशी मिशनरियों, जमीनदारों, अंग्रेज शासकों तथा शोषणकर्ताओं से आज़ाद करने के लिए संगठित मुक्ति संघर्ष किया। उन्होंने आदिवासी- वनवासी समाज को संगठन के सूत्र में बाँधने के लिए कई सभायें की और उलगुलान क्रांति का शंखनाद किया।

बिरसा के इस शंखनाद से आदिवासी युवक जाग उठे। चलकद क्रांतिकारी आंदोलन का केन्द्र बना। विरोध के प्रथम चरण के रूप में एक असहयोग आंदोलन शुरू किया गया, बिरसा धरती आबा के रूप में जाने जाने लगे। बिरसा के आंदोलन से ब्रिटिश सरकार भौचक्की रह गई। ब्रिटिश सरकार ने तुरंत बिरसा को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। पुलिस ने गिरफ्तारी के लिए एक टुकड़ी को चलकद रवाना किया लेकिन गाँव वालों के सशक्त विरोध ने बंदूकों से लैस पुलिस को भी थर्रा दिया। परंतु उन्हें छल प्रपंच से गिरफ्तार कर 25 अगस्त,1895 को हज़ारीबाग जेल लाया गया। बिरसा की गिरफ्तारी से उनके अनुयायियों में अंग्रेजों से टक्कर लेने की इच्छा और बलवती हो गई । 30 नवम्बर, 1897 को जब बिरसा रिहा हुए तो पूरा वनवासी अंचल जाग उठा। वे सब तीर धनुष के साथ आंदोलन की मांग कर रहे थे। अंग्रेजों से भीषण संग्राम के लिए प्रशिक्षण, संगठन, नीतियाँ और हथियार संग्रह का काम शुरू हुआ । बिरसा और आदिवासी समाज के पूर्वजों का शोषण और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष शुरू हो गया। आदिवासी योद्धा बिरसा के नेतृत्व में कई पुलिस थानों, गिरजाघरों, सरकारी कार्यालयों आदि को आग के हवाले कर दिया गया। जमीनदारों से अपने को मुक्त कराने के लिए लगान न देने और जंगल का अधिकार वापस लेने की बात कही गई। इन सबसे अंग्रेजी हुकूमत बौखला गई और कई बिरसाइतों को गिरफ्तार किया गया जिससे आंदोलन और उग्र हो गया।

9 जनवरी, 1900 के दिन जब बिरसा डोंबारी पहाड़ी पर सभा कर रहे थे, सभी मुण्डा, उराँव, संथाल, खड़िया, हो, माँझी आदिवासी लोग जुटे थे। हज़ारों की संख्या में आदिवासी बिरसा के गीत गाते माथे पर चंदन लगाए, हाथ में सफेद और लाल पताका लिए एकत्रित हुए थे। तब अंग्रेजों को खुफिया सूचना मिली की बिरसा सभा कर रहे हैं। कमिश्नर स्ट्रीट फील्ड डोंबारी पहाड़ी पहुँचे और अंधाधुंध गोलियाँ चलाना शुरू कर दिया। दोनों ओर से संग्राम आरंभ हो गया। तोपों और बंदूकों के सामने तीर, धनुष, कुल्हाड़ी, भाला और पत्थर कहाँ टिक पाते? पूरी डोंबारी पहाड़ी खून से लाल हो गई। बिरसा आंदोलन को जीवित रखने के लिए वहाँ से आग्रह करने पर सुरक्षित जंगल में चले गए । परन्तु भेदियों की मदद से उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 9 जून, 1900 के दिन इस महान आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी की रहस्यमय ढंग से राँची जेल में मृत्यु हो गई। कहा गया कि उन्हें हैजा था लेकिन धारणा यह है कि उन्हें जहर दिया गया। बिरसा आज हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनके जलाए दीप आज भी जल रहे हैं। आज भी वनवासी - आदिवासी समाज उनको धरती आबा के रूप में याद करता है। वर्तमान भारत की परिस्थिति में जनजाति समाज उपेक्षा, दरिद्रता, शोषण, विदेशी षड्यंत्रों, दीनता आदि का शिकार बना है।

आवश्यकता है कि जनजाति बंधुओं को गले लगाएँ तभी उनके सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त होगा और भारत पुन: वैभवशाली बनकर विश्व का मार्गदर्शन करेगा और यही भगवान बिरसा मुण्डा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

-लेखक वनवासी कल्याण आश्रम अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के प्रांत प्रचार प्रमुख हैं

संविधान में वैदिक संस्कृति की छाप

-लेखाराम विश्नोई, जोधपुर

भारत की संविधान सभा के अथक प्रयासों से निर्मित भारत का संविधान यद्यपि 26 जनवरी, 1950 से प्रभावी हुआ, परंतु यह कार्य 26 नवम्बर 1949 को पूर्ण हो गया था। कुछ प्रावधान उसी दिन से लागू हो गए थे। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ.राजेन्द्र प्रसाद थे। प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ.भीमराव अम्बेडकर थे। संविधान सभा के सदस्य केटी शाह के सुझाव से संविधान की मूल प्रति का सुलेखन कराया गया। भारतीय सभ्यता के पूरे कालखंड के 22 चित्र बनाकर संविधान के 22 भागों में जोड़ने का निर्णय लिया गया। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ.राजेन्द्र प्रसाद ने शांति निकेतन के आचार्य नंदलाल बोस को पत्र लिखकर चित्रांकन का अनुरोध किया था। इसमें नृत्य करते हुए भगवान नटराज, यज्ञ करते वैदिक ऋषि-मुनियों की यज्ञशाला, लंका विजय के पश्चात् अयोध्या लौटते श्रीराम सीता और लक्ष्मण, गंगा का धरती पर अवतरण, रामायण, महाभारत, मोहनजोदड़ो की सभ्यता, बुद्ध के उपदेश, महावीर के जीवन, मौर्य, गुप्त और मुगल काल के अलावा गांधी, सुभाष, हिमालय से लेकर सागर आदि के सुंदर चित्र बने हैं। ये चित्र संविधान की सजावट में संस्कृति की छाप छोड़ते हैं। भारतीय संविधान में चित्रों के माध्यम से वैदिक काल से वर्तमान तक की भारतीय विकास यात्रा का सुंदर चित्रण किया गया। संविधान की जिस प्रति पर 26 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा के सदस्यों ने हस्ताक्षर किए थे उसकी मूल प्रतियां हिंदी और अंग्रेजी भाषा में अलग-अलग तैयार की गई। हिंदी भाषा में यह कार्य बसंतकृष्ण वेद द्वारा किया गया। अंग्रेजी में भारतीय संविधान को प्रेमबिहारी रायजादा ने अपनी हस्तलिपि से लिखा। ■

गुरु नानक देव जी की आध्यात्मिक यात्राएं

गुरु नानक जी की दिव्य आध्यात्मिक यात्राओं को उदासी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि गुरु नानक जी दुनिया के दूसरे सबसे अधिक यात्रा करने वाले व्यक्ति हैं। उनकी अधिकांश यात्राएँ उनके साथी भाई मर्दाना जी के साथ पैदल ही की गई थीं। उन्होंने सभी चार दिशाओं में यात्राएं की।

गुरु नानक जी ने 1500 से 1524 की अवधि के मध्य दुनिया की अपनी पांच प्रमुख यात्राओं में 28 हजार किलोमीटर से अधिक की यात्रा की थी। सबसे अधिक यात्रा करने वाले व्यक्ति का रिकॉर्ड मोरक्को के इब्न बतूता के नाम है। नीचे उन स्थानों की संक्षिप्त जानकारी दी गई है जहाँ पर गुरु नानक जी ने भ्रमण किया था।

पहली उदासी : 1500-1506

यह क्रम लगभग 7 वर्षों तक चला और इन कस्बों और क्षेत्रों का भ्रमण किया – सुल्तानपुर, तुलम्बा (आधुनिक मखदुमपुर, जिला मुल्तान), पानीपत, दिल्ली, बनारस (वाराणसी), नानकमत्ता (जिला नैनीताल, (उत्तर प्रदेश), टांडा वंजारा (जिला रामपुर), कामरूप (असम), आसा देश (असम),सैदपुर (आधुनिक अमीनाबाद, पाकिस्तान), पसरूर (पाकिस्तान), सियालकोट (पाकिस्तान)।

दूसरी उदासी : 1506-1513

यह यात्रा भी लगभग 7 वर्षों तक चली और वे धनसारी घाटी, सांगलादीप (सीलोन) जैसे इलाकों से होकर गुजरे।

तीसरी उदासी : 1514-1518

लगभग 5 वर्षों तक उन्होंने कश्मीर, सुमेर परबत, नेपाल, ताशकंद, सिक्किम, तिब्बत जैसे इलाकों का भ्रमण किया। माना जाता है कि वे चीन भी गए थे, इसके समर्थन हेतु साक्ष्यों का संग्रह चल रहा है।

चौथी उदासी : 1519-1521

इस दौरान वे इराक, मक्का, तुर्की और अरब देश गए। ऐसा कहा जाता है कि सीरिया में बाबा फ़रीद की मस्जिद के पास 'वली हिंद की मस्जिद' नाम की एक मस्जिद है। माना जाता है कि अफ्रीका महाद्वीप गए थे, इसके समर्थन करने के लिए साक्ष्यों का संग्रह चल रहा है।

तुर्की में गुरु नानक जी के स्मारक पर निम्नलिखित लिपिबद्ध है

तुर्की में गुरु नानक जी के स्मारक पर अरबी / फारसी / तुर्की भाषाओं में (गुरुमुखी लिपि में लिप्यंतरित) 'जहाँगीर जामन हिंद लाट अल मजीद नानक' लिखी गई है जिसका पंजाबी में अर्थ है : जमाने दा मालिक, हिन्द दा बंदा, रब दा नानक जिसका हिन्दी में अर्थ है : आज के भगवान, भारत के निवासी, भगवान के आदमी नानक। इसके आगे भी काफी लंबी पंक्तियाँ लिखी हुई हैं, किन्तु शिलालेख अब सुपाठ्य नहीं है। इसके बारे में अभी भी बहुत सारे रहस्योद्घाटन होने बाकी है।

बगदाद के पीर बहलोल से मिलना और मठ का निर्माण

मदीना की यात्रा करने के बाद, गुरु नानक देव जल्द ही बगदाद पहुंचे और शहर के बाहर मरदाना के साथ एक मंच संभाला। गुरु नानक देव जी ने प्रार्थना करने के लिए लोगों का आह्वान किया। उन्होंने अपनी प्रार्थना में मुहम्मद अल रसूल अल्लाह को हटाकर उसके बदले सतनाम शब्द का प्रयोग किया जिस पर पूरी आबादी खामोश हो गई और उग्र होकर गुरु नानक जी को एक कुएं में धकेल दिया और पत्थरों से मारा। इतनी पत्थरबाजी के बाद गुरू नानक जी कुएं से बिना किसी चोट के निशान के बाहर निकल आए। उन्हें सकुशल वापस निकलते देखने के बाद इराक के आध्यात्मिक नेता, पीर बहलोल शाह ने उन्हें पीर दस्तगीर कहकर पुकारा, क्योंकि उन्हें समझ में आ गया कि गुरु नानक जी हिंद के एक पवित्र और सिद्ध संत थे और उन्होंने गुरु नानक जी को आध्यात्मिक चर्चा के लिए आमंत्रित किया।

पीर बहलोल शाह, जो एक ईरानी थे, लेकिन इराक में आकर बस गए थे, उन्होंने गुरु नानक जी से तीन सवाल पूछे और तीनों का समुचित उत्तर पाने के बाद उन्होंने गुरु नानक जी के साथ किए गए दुर्व्यवहार के लिए स्थानीय लोगों को क्षमा करने और लंबे समय तक रहने की अपील की। उनके आग्रह पर गुरु नानक जी वहां 17 दिनों तक रहे। गुरु नानक जी ने अपने इस प्रवास के दौरान पीर बहलोल के बेटे के साथ पारलौकिक दुनिया की सूक्ष्म यात्रा की। वो दो सेकंड के एक अंश में हवा में अंतर्धान हो गए और जब वापस लौटे तो पवित्र भोजन का एक कटोरा धरती पर लाए। आज विज्ञान भी सूक्ष्म यात्रा पर काम कर रहा है। गुरु नानक जी के वहाँ जाने के बाद, बहलोल ने उनकी याद में एक स्मारक खड़ा किया जहाँ गुरुनानक जी बैठते और प्रवचन देते थे।

कुछ समय बाद मंच के ऊपर एक कमरे का निर्माण किया गया, जिसमें तुकिसी भाषा में शिलालेख के साथ एक पत्थर की पटिया लगाई गई। 2003 के युद्ध के दौरान इस मठ को पूरी तरह से उजाड़ दिया गया। (पाथेय डेस्क)

विजय दिवस : 16 दिसम्बर

युद्ध में विजय किन्तु टेबल पर हार : शिमला समझौता

■ हरिशंकर गोयल ''श्री हरि''

''युद्ध शस्त्रों से नहीं वरन सेना के साहस और हौंसले से जीते जाते हैं''। इस कहावत को भारत की सेना के तत्कालीन सेना प्रमुख जनरल सैम मानेक शॉ ने सन् 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध में सत्य सिद्ध कर दिया। सिर्फ 13 दिनों के युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को करारी मात दी। पाकिस्तान के 93 हजार से अधिक सैनिकों ने लेफ्टिनेंट जनरल एएके नियाजी के नेतृत्व में भारत के लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के समक्ष 16 दिसम्बर, 1971 को तब के पूर्वी पाकिस्तान और अब बांग्लादेश की राजधानी ढाका में आत्म-समर्पण कर दिया।

यह भारत की पाकिस्तान पर बहुत बड़ी विजय थी। उस समय भारत की सेना ने पाकिस्तान का 15 हजार वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्रफल भी अपने अधिकार में कर लिया था। तब पाकिस्तान पूरी तरह से भारत की गिरफ्त में था । स्थिति ऐसी थी कि भारत 'पाक अधिकृत कश्मीर' को पाकिस्तान से मुक्त करा सकता था। लेकिन युद्ध में मिली विजय को हमारे तत्कालीन शासकों ने शिमला समझौते के अन्तर्गत टेबल पर बैठकर व्यर्थ कर दिया।

युद्ध 3 दिसम्बर, 1971 को प्रारंभ हुआ था जब भारतीय सेना ने पाकिस्तान की सेना पर आक्रमण कर दिया। शीघ्र ही भारतीय वायुसेना ने ढाका शहर पर बमबारी करके उसे अपने नियंत्रण में ले लिया। इधर पश्चिमी पाकिस्तान की ओर भारतीय थल सेना ने कूच करते हुए करीब 15 हजार वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र अपने अधिकार में कर लिया ।

सेना की इतनी बड़ी सफलता को हमने 2 जुलाई, 1972 को हुए शिमला समझौते के द्वारा व्यर्थ कर दिया। इसके बदले में भारत को क्या मिला? कुछ नहीं। यह भारत की कूटनीतिक पराजय थी।

शिमला समझौते में भारत के पक्ष में केवल इतनी सी बात थी कि भारत और पाकिस्तान दोनों अपने विवाद द्विपक्षीय वार्ता से हल करेंगे। किसी तीसरे देश अथवा संगठन को वार्ता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा । इस समझौते से कश्मीर का मुद्दा अंतरराष्ट्रीय विषय से हटकर फिर से द्विपक्षीय बन गया। पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने 93 हजार सैनिक और 15 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र वापस लेकर हमें यह झुनझुना पकड़ा दिया था ।

भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, की पता नहीं, क्या मजबूरियां रहीं होंगी? यह प्रश्न तो उनसे पूछा ही जाना चाहिए था। यदि इतने सैनिकों के बदले में ''पाक अधिकृत कश्मीर'' ले लिया होता तो पाकिस्तान द्वारा पल्लवित, पोषित आतंकवाद का दंश भारत को झेलना नहीं पड़ता। पाकिस्तानी आतंकवाद ने अब तक हजारों नागरिकों और सैनिकों की जान ले ली और अरबों रुपए की सम्पत्ति नष्ट कर दी है । हम 26/11 के मुम्बई हमले को कैसे भूल सकते हैं?

16 दिसम्बर को हम लोग ''विजय दिवस'' के रूप में प्रति वर्ष मनाते हैं। हमारे सैन्य अधिकारियों एवं जवानों के साहस और उनकी वीरता पर पूरे देश को गर्व हैं। परंतु जब भी 16 दिसम्बर आता है तो मन में यह प्रश्न अवश्य कौंधता है कि काश ! हम सेना की इतनी बड़ी सफलता को टेबल पर भुना पाते।

-लेखक सेवानिवृत्त राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी हैं

विमोचन (जयपुर)

15 नवम्बर को जयपुर के सेवा सदन में आयोजित महिला समन्वय के दीपावली मिलन कार्यक्रम में सह प्रांत संघचालक श्री हेमंत सेठिया एंव प्रांत संयोजिका महिला समन्वय सुनीता अग्रवाल द्वारा विभिन्न संगठनों से जुड़ी मातृशक्ति के मध्य विशेषांक का विमोचन किया गया।

स्वयंसेवक 'पंच परिवर्तन' के विषय लेकर जाएंगे समाज में

● 'स्व' आधारित जीवन शैली ● सामाजिक समरसता ● कुटुम्ब प्रबोधन ● पर्यावरण ● नागरिक कर्त्तव्य

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष में 'पंच परिवर्तन' के विषय लेकर समाज में जाएगा। गत 25 व 26 अक्टूबर को मथुरा में हुई संघ की अ.भा.कार्यकारी मंडल की बैठक में यह निर्णय हुआ है।

बैठक के समापन पर हुई पत्रकार वार्ता में सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले ने बताया कि संघ व्यक्ति निर्माण का कार्य करता है और यह प्रक्रिया निरंतर जारी है। चरित्र निर्माण की यह पद्धति केवल चर्चाओं में नहीं वरन आचरण में दृष्टिगोचर होनी चाहिए।

'स्व' का अर्थ

सरकार्यवाह जी ने कहा कि 'स्व' का कार्य मिट्टी की सुगंध का कार्य है। महात्मा गांधी ने भी बोला था स्वराज्य। 'स्व' का अर्थ 'स्वाधीनता', राष्ट्रीय स्वत्व है। यहां की अपनी परम्परा, अपनी सभ्यता, इसके अनुभवों के साथ आचरण करना है, आधुनिकता का पालन करना है, आधुनिकता में भी 'स्व' को नहीं भूलना है। उन्होंने कहा पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर की जयंती का यह 300वां वर्ष है। सामाजिक जाग्रति, मंदिरों का जीर्णोद्धार, कुशलतापूर्वक शासन करना यह दर्शाता है कि 300 वर्ष पूर्व भी मातृशक्ति जनता के लिए और जनकार्य के लिए शासन चलाने में सक्षम थी।

हिंदू समाज को पलायन की आवश्यकता नहीं

ड्रग के प्रति आकर्षण नहीं होना चाहिए। संघ का आग्रह संस्कार, समरसता, शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर है। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि सभी इंटरनेट प्लेटफॉर्म पर जो कुछ दिखाया जा रहा है, उसमें से बहुत कुछ सामाजिक नहीं है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होनी चाहिए, पर इस पर एक नियामक भी बनाने की आवश्यकता है। सरकार तो इस ओर ध्यान देगी ही, समाज को भी संस्कारों में वृद्धि करके इस ओर ध्यान देना चाहिए। वहीं हाल ही में बांग्लादेश घटनाक्रम पर उनका कहना था कि हिंदू समाज को वहां से पलायन करने की आवश्यकता नहीं है। वे वहीं डटे रहें, वह उनकी भूमि है, बांग्लादेश में हमारे शक्तिपीठ हैं।

संघ कार्य की वर्तमान स्थिति

प्रकार	कुल स्थानों पर कार्य	कुल संख्या
दैनिक शाखाएं	45,411	72,354
साप्ताहिक मिलन	29,369	29,369
मासिक संघ मंडली	11,382	11,382

कुल : एक लाख 13 हजार 105 इकाइयां

हम समाज के साथ हैं

विश्वभर में हिंदू रहते हैं। जहां भी संकट आता है, हिंदू भारत की ओर देखता है। वक्फ बोर्ड पर उन्होंने कहा कि जेपीसी जो भी निर्णय लेगी, आगे सरकार जनभावनाओं को ध्यान में रखकर कार्य करेगी। श्रीकृष्ण जन्मभूमि विषय पर उनका कहना था कि मामला न्यायालय में है, न्यायालय निर्णय लेगा। अयोध्या की तरह इस पर कुछ करने की आवश्यकता नहीं है, समाज तय करेगा। हम समाज के साथ हैं।

आपदा में तैयार रहता है स्वयंसेवक

इस वर्ष पश्चिम बंगाल में तारकेश्वरी नदी में आयी बाढ़ में 25 हजार लोगों की स्वयंसेवकों ने राहत शिविरों में सेवा की। उड़ीसा बाढ़ के दौरान 4 हजार परिवारों को स्वास्थ्य और भोजन आदि सहायता पहुंचायी।

जुलाई में वायनाड और कर्नाटक में भूस्खलन में एक-एक हजार स्वयंसेवक लगे और सहायता कार्य किए। बड़ोदरा, जामनगर, द्वारका बाढ़ में भी स्वयंसेवकों ने भोजन आदि की व्यवस्था की साथ ही आपदा में 600 मृतकों का अंतिम संस्कार भी कराया। केवल हिन्दू ही नहीं, बल्कि विभिन्न समुदायों के मृतकों का भी उनकी परंपरा के अनुसार अंतिम संस्कार कराया गया।

बैठक से पूर्व सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत और सरकार्यवाह जी ने हाल ही में दिवंगत हुए राघवाचार्य जी महाराज, रैवासा (सीकर), प्रसिद्ध उद्योगपति पद्म विभूषण रतन टाटा, पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य, ईनाडु और रामोजी फिल्म सिटी के संस्थापक रामोज़ी राव, कम्युनिस्ट नेता सीताराम येचुरी, पूर्व विदेश मन्त्री के. नटवर सिंह, बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री सुशील मोदी, एडमिरल (से.नि.) रामदास सहित अन्य दिवंगत लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की। ■

गोधरा का सच दिखाती 'द साबरमती रिपोर्ट'

■ चेतना शर्मा

27 फरवरी, 2002 को गोधरा (गुजरात) में साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन की बोगी संख्या एस-6, जो अयोध्या से लौट रहे कारसेवकों से भरी थी, को मुस्लिम दंगाइयों द्वारा आग लगा दिए जाने की घटना पर आधारित है 'द साबरमती रिपोर्ट' फिल्म। इस आग में 59 कारसेवक जिन्दा जलकर राख हो गए थे। घटना के बाद दंगे हुए थे। इन दंगों पर अब तक कई फिल्में बनी हैं या जिन फिल्मों के विषय का गुजरात दंगों से कोई लेना देना नहीं था, उन तक की पृष्ठभूमि में उन्हें दिखाया गया, जैसे 'देव' और 'काई पो चे'। परन्तु कारसेवकों की हत्या की घटना को पहली बार प्रमुखता से पर्दे पर उतारा है बालाजी मोशन पिक्चर्स ने। एक राजनैतिक षड्यंत्र के रूप में किस प्रकार कुछ सही मुद्दों को छुपाया गया व कुछ भ्रामक मुद्दों को उछाला गया, यह इस फिल्म में बहुत अच्छे से दिखाया गया है। विपक्षी पार्टी कांग्रेस ने किस प्रकार तुष्टिकरण की नीति को अपनाया व उस समय की मीडिया ने किस प्रकार कांग्रेस का साथ दिया, यह सच निडरता से फिल्म में सामने रखा गया है। अलग-अलग कमीशन बनाकर उनकी अलग-अलग रिपोर्ट से जनता को भ्रमित किया गया। फिल्म में ऐसे अनेक नाम व प्रतीक मिल जाते हैं, जो उस समय के लोगों या संस्थानों से संबंधित पाए जाते हैं।

मुख्य भूमिका में अभिनेता विक्रांत मैसी ने बेहतरीन अभिनय किया है। एक प्रतिष्ठित न्यूज चैनल के कैमरामैन समर कुमार के किरदार को अच्छे से दिखाया गया है। समर कुमार जब देखता है कि कैसे उसका चैनल सच को छुपा कर इस नरसंहार को एक दुर्घटना बता रहा है, तो वह सच को उजागर करता है। अरुंधति रॉय व तीस्ता जावेद सीतलवाड़ की उस षड्यंत्रकारी सोच को भी दर्शाया गया है, जो बनर्जी कमीशन में दिखाई दी थी, जिसमें ट्रेन के अंदर से आग लगने की पुष्टि की गई थी। फिल्म में किसी भी समुदाय से घृणा का आह्वान नहीं किया गया है, केवल कारसेवकों के साथ हुए अन्याय को उजागर किया गया है।

फिल्म में बताया गया कि कैसे मुस्लिम समुदाय द्वारा जानबूझ कर अपने ही लोगों को भड़का कर इस घटना को अंजाम दिया गया। एक-एक षड्यंत्र को बड़ी बारीकी से दिखाया गया है। किस प्रकार पेट्रोल एकत्रित किया गया, किस प्रकार झूठी अफवाह से लोगों को भड़काया गया, किस प्रकार ट्रेन पर पत्थरबाजी कर आग के हवाले किया गया व दरवाजों को बन्द कर कारसेवकों के बच निकलने के सभी रास्तों को रोक दिया गया। फिल्म के अंत में सभी बलिदानियों की पहचान को उजागर किया गया है और अयोध्या में भगवान राम मंदिर में विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के दृश्य दिखाए गए हैं। फिल्म सभी को एक बार अवश्य देखनी चाहिए। ■

आदिपुरुष भगवान मनु

■ इंदुशेखर 'तत्पुरुष'

भगवान मनु मानवीय प्रजाति के आदिपुरुष हैं। मनु से उत्पन्न होने के कारण ही हम मनुष्य अथवा मानव कहलाते हैं। मनु ब्रह्माजी के मानस पुत्र थे। ब्रह्माजी स्वयंभू कहलाते हैं। अत: स्वयंभू का पुत्र होने के कारण मनु स्वायंभुव नाम से प्रसिद्ध हुए। सृष्टि को उत्पन्न करने के लिए ब्रह्माजी ने प्रथम स्त्री शतरूपा की रचना की। इन मनु-शतरूपा से ही सम्पूर्ण मानवी प्रजा की उत्पत्ति हुई।

कुछ विद्वानों का मानना है कि इन्द्र की भांति मनु भी एक व्यक्ति न होकर एक उपाधि है, जो प्रजापतियों के लिए प्रयुक्त होती है। इस प्रकार भारतीय वाङ्मय में चौदह मनुओं का वर्णन हुआ है। एक मनु के काल को मन्वन्तर कहते हैं। वर्तमान में वैवस्वत नाम के सातवें मनु का काल चल रहा है, जिसे वैवस्वत मन्वन्तर कहा जाता है।

मनु ने मानवीय मर्यादा एवं धर्मपालन के लिए एक आदर्श धर्मसंहिता का निर्माण किया जो आगे चलकर मनुस्मृति के रूप में निर्मित हुई। मनुस्मृति में धर्मशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र एवं विधि विधान का समावेश है। मनुस्मृति में युग की आवश्यकता के अनुसार समय समय पर परिवर्तन होते गए, जैसे वर्तमान काल में परिस्थितियों के अनुसार संविधान में संशोधन किया जाता है।

विद्वानों का मानना है कि मनुस्मृति किसी एक विद्वान द्वारा एक समय में रचित ग्रन्थ न होकर समय-समय पर बदलती हुई सामाजिक व्यवस्थाओं की संहिता है। इसमें लिखे सभी सिद्धांत और निर्देश सभी युगों के लिए नहीं हैं।

प्रलयकाल आने पर मनु ने भगवान विष्णु के निर्देश से सृष्टि के समस्त बीजों को एक नौका में सुरक्षित रखा और हिमालय पर्वत पर चले गए। जलप्रलय शान्त होने पर उन्होंने फिर से पृथ्वी को बसाया।

– लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं

धर्मांतरण में शामिल एनजीओ का होगा लाइसेंस रद्द

केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने एक अधिसूचना जारी कर कहा है कि धर्मांतरण, देश विरोधी गतिविधियों, विरोध/प्रदर्शन भड़काने वाले तथा आतंकी गतिविधियों में शामिल एनजीओ का लाइसेंस रद्द किया जा सकेगा। यह प्रतिबंध विदेशी फंडिंग पर भी लागू रहेगा।

जहां राष्ट्रधर्म , वहां परिवार धर्म पीछे छूट जाता है - रामभद्राचार्य जी महाराज

बीती 7-15 नवम्बर के मध्य जयपुर स्थित विद्याधर नगर स्टेडियम में चली रामकथा के दौरान जगतगुरु रामभद्राचार्य जी महाराज का कहना था कि जहां राष्ट्रधर्म आता है, वहां परिवार धर्म पीछे छूट जाता है। बच्चों के नाम जन्म आधार पर रखें। जन्मदिन पर केक काटने से उम्र कम होती है। केक के स्थान पर सुंदरकाण्ड का पाठ करावें, बालक चिरंजीवी होगा। जहां बेटी की उपेक्षा व केवल बेटे का सम्मान होता है, वह घर नष्ट हो जाता है।

रूसी राष्ट्रपति ने कहा- भारत विशाल व महान देश, वह भी सुपर पॉवर सूची में शामिल होने का हकदार है

भारत एक विशाल और महान देश है यह कहना है रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन का। उन्होंने कहा, भारत ग्लोबल सुपर पॉवर की सूची में शामिल होने का हकदार है। भारत की अर्थव्यवस्था वर्तमान में अन्य देशों की तुलना में तेजी से बढ़ रही है, जो बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच बड़ी बात है।

संघ के स्वयंसेवकों का हरित कुंभ अभियान

'जन-जन में कुंभ, घर-घर में कुंभ और कुंभ में कुंभ' थीम पर आधारित होगा इस बार का प्रयागराज महाकुंभ

प्रयागराज में प्रति 12 वर्ष बाद लगने वाला कुंभ मेला इस बार मकर संक्रांति (13 जनवरी, 2025) से महाशिवरात्रि (26 फरवरी, 2025) के मध्य आयोजित हो रहा है। कुंभ में करोड़ों श्रद्धालु एकत्र होकर गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम स्थल पर स्नान करते हैं। पर्यावरण का विशेष ध्यान रखते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इसे 'हरित कुंभ' बनाने का संकल्प लिया है। उक्त अभियान में जन-जन की सहभागिता हो इस हेतु हर घर से एक थाली (स्टील की) और एक थैला (कपड़े का) एकत्र कर कुंभ स्थल पर भेजा जायेगा जिसे कुभ स्नान करने वालों को उपयोग हेतु दिया जाएगा। ऐसा करके हजारों- लाखों टन कचरे से गंगा को प्रदूषित होने से बचाया जा सकेगा।

इसी को लेकर बीती 17 नवम्बर को पर्यावरण संरक्षण गतिविधि, झालावाड़ के कार्यकर्ताओं ने पीपा धाम के पीठाधीश्वर झनकाश्वर जी महाराज की उपस्थिति में एक पोस्टर का विमोचन किया। इस अवसर पर दानदाताओं ने थैले व थाली देने की सहमति प्रदान की।

पर्यावरण संरक्षण गतिविधि, राज.क्षेत्र के संयोजक श्री विनोद मेलाना ने बताया कि जयपुर प्रांत से 11 लाख, चित्तौड़ प्रांत से 2 लाख व जोधपुर प्रांत से 2 लाख थाली व थैले कुंभ स्थल पर भेजने की योजना है।

सेवा भारती की नई पहल - सारथी

जयपुर की सेवा भारती समिति द्वारा महिलाओं को स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कौशल विकास केंद्रों के माध्यम से विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान किए जा रहे हैं। केंद्र प्रभारी विक्रम सिंह ने बताया कि समिति द्वारा इसी अक्टूबर माह में ड्राइविंग स्कूल 'सारथी' की शुरुआत की गई है। इस के माध्यम से महिलाओं को ड्राइविंग का प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। अभी तक स्कूल से 9 महिलाओं और 2 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

सामाजिक समरसता

बावरी परिवार ने मंदिर पर रखा शिखर तो वाल्मीकि परिवार से चढ़वाई ध्वजा

पाली जिले की मारवाड़ तहसील का एक गांव है-निम्बली। हाल ही में बनकर तैयार हुए शीतला माता के मंदिर के शिखर पर ध्वज कौन चढ़ाएगा, इसके लिए बोली लगाई गई। सबसे अधिक बोली लगाने वाले कुंवर तेज सिंह ने स्वयं या अपने किसी परिवारजन से ध्वजा चढ़ाने की बजाय यह सम्मान गांव के ही एक वाल्मीकि समाज के कालूराम को दिया। गांव के महेन्द्र बावरी ने मंदिर के शिखर पर अपने हाथों से कलश रखा। ध्वजा चढ़ाने वाले कालूराम वाल्मीकि ने भरे कंठ से कहा, '' यह मेरा सौभाग्य है कि यह सम्मान उन्होंने वाल्मीकि समाज को दिया। पूरे वाल्मीकि समाज की ओर से उन्हें कोटि कोटि नमन।'' तेजसिंह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक हैं। उन्होंने कहा कि संघ की प्रेरणा से ही मैं यह विचार कर पाया हूँ। इससे पूर्व भी उन्होंने समाज सेवा के लिए लाखों रुपए खर्च किए हैं।

समरसता की मिसाल 'निम्बली' गांव

कुटुम्ब प्रबोधन : जन्मोत्सव व विवाह वर्षगांठ पर केक काटने के बजाए भजन संध्या का आयोजन

टोंक : सामान्यतया जन्मदिन हो या विवाह की वर्षगांठ, मोमबत्तियां बुझाकर केक काटने का एक चलन सा हो गया है। टोंक के एक परिवार ने ऐसे शुभ अवसर पर प्रेरक परम्परा की शुरुआत की है। बीती 21 नवम्बर को टोंक के अमित कुमार व बीना जैन के विवाह की वर्षगांठ तथा उनके पुत्र रुद्र का जन्मदिन था। उन्होंने दिन की शुरुआत गायों को हरा चारा, गुड़, लापसी खिलाकर की। रात्रि में श्याम भजन संध्या का आयोजन किया। उन्होंने कहा कि वे आजीवन किसी भी शुभ अवसर पर केक नहीं काटेंगे।

'स्व' की ओर : राजस्थान विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान परम्परा शोध केन्द्र की होगी स्थापना

नई शिक्षा नीति- 2020 के अंर्तगत राजस्थान विश्वविद्यालय ने 'भारतीय ज्ञान एवं परंपरा' को पाठ्यक्रम में शामिल किया है। एक शोध केन्द्र की स्थापना करने की भी योजना है। कुलपति प्रो. अल्पना कटेजा ने बताया कि इससे साहित्य, दर्शन तथा विज्ञान आदि विषयों से जुड़े शोध छात्रों को दिशा मिल सकेगी।

नागरिक कर्तव्य : व्यापारियों ने खाली किए बरामदे

बहुधा देखा जाता है कि बाजारों में बने बरामदों में दुकानदार अपना सामान रख देते हैं। जिसके कारण बरामदे बनाने का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। बरामदे पैदल चलने वालों के लिए होते हैं। जयपुर में पिछले दिनों पुलिस व व्यापारियों ने चांदपोल व अन्य बाजारों के बरामदे खाली करने के लिए संयुक्त अभियान चलाया है। ऐसा सभी शहर-कस्बों में हो तो कितना अच्छा रहे! यह हमारा नागरिक कर्तव्य भी है।

एंबुलेंस को रास्ता न देने पर लाइसेंस रद्द

बीमार व घायल लोगों को चिकित्सालय पहुँचाने के लिए एंबुलेंस की व्यवस्था रहती है। इसका होर्न सुनाई दे तो एंबुलेंस के आगे चल रहे वाहन चालकों का कर्तव्य होता है कि सड़क के एक तरफ अपने वाहन को ले जाकर रोक लें तथा एंबुलेंस को रास्ता दें। अपने इस कर्तव्य की पूर्ति से पता नहीं किसी की जान ही बच जाए। केरल के त्रिशूर में एंबुलेंस को रास्ता न देने पर एक कार के ड्राइवर का लाइसेंस रद्द कर दिया गया ।

अंतिम यात्रा के लिए मोक्ष रथ सुविधा

जयपुर के 20 से भी ज्यादा मोक्षधामों के ट्रस्ट या समितियों द्वारा सुविधाजनक मोक्ष रथ उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इन्हें ग्वालियर व गुजरात से विशेष रूप से तैयार कराया गया है। बताया गया है कि गोविंद देव जी मंदिर तथा अमरापुरा सिंधी समाज द्वारा नि:शुल्क मोक्ष रथ एवं शीत शव पेटिका उपलब्ध कराई जा रही हैं।

आत्मनिर्भर भारत : महिलाओं को बना रही हैं आत्मनिर्भर

जयपुर की रीता जी ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए पहले स्वयं पेंटिंग, पेपर मेसी व सिलाई आदि का कार्य सीखा और फिर एक संस्था बनाकर महिलाओं का समूह बनाते हुए उनको रोजगार उपलब्ध कराया। उनके इस प्रयास से न केवल महिलाएं आत्मनिर्भर हुई बल्कि समाज में सम्मान की दृष्टि से भी देखी जा रही हैं। महिलाओं व लड़कियों को आत्मरक्षा कैसे करें, को लेकर निर्भया स्क्वाड दल के साथ मिलकर पार्कों व स्कूलों में जाकर वह ट्रेनिंग देने का काम भी कर रही हैं।

इंटेलिजेंस की मुखिया बनी तुलसी गेबार्ड - गीता है प्रेरणा

तुलसी गेबार्ड को अमेरिकी सरकार ने नेशनल इंटेलिजेंस का मुखिया नियुक्त किया है। वे सीआईए और एफबीआई जैसी 18 सुरक्षा एजेंसियों के बीच समन्वय का काम देखेंगी। ईसाई परिवार में जन्मी तुलसी हिंदू धर्म को मानती हैं। हमेशा अपने साथ गीता रखती हैं। एक साक्षात्कार के दौरान उन्होंने कहा था कि मैं हमेशा हिंदू ही रहूंगी, हिंदू धर्म मेरे जीवन का प्रेरणा स्रोत है। यह मेरे लिए जिंदगी जीने का एकमात्र तरीका है।

अवैध प्रवासियों को निकालेगा - अमेरिका

अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा है कि अवैध रूप से रह रहे प्रवासी (यानी घुसपैठिए) देश को बर्बाद कर रहे हैं इसलिए उन्हें डिपोर्ट (जबरन वापसी) किया जायेगा। इसी के साथ प्रवासी परिवारों के लिए प्रारम्भ की गई 'फूड डेबिट कार्ड योजना' को बंद करने की घोषणा की गई जिसके अंतर्गत ऐसे हजारों परिवारों को हर महीने लगभग 30 हजार रुपये खाने के नाम पर दिए जा रहे थे। इसके उलट भारत में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशियों और रोहिंग्या को राजनेताओं ने वोट बैंक का हिस्सा बना कर देश को बर्बाद कर रहे हैं।

फास्ट फूड बंद करेंगे अमेरिका के स्वास्थ्य मंत्री

विश्व भर में फास्ट फूड की इंडस्ट्री खड़ी करने में सबसे ऊपर अमेरिका का नाम आता है। यहां की फास्ट फूड कंपनियों में मैक डोनाल्ड्स, केएफसी, सबवे, डोमिनोज के दुनिया भर में श्रृंखला (स्टोर, रेस्टोरेंट आदि) हैं। लेकिन जल्द ही अब अमेरिका की सरकार बढ़ती स्वास्थ्य समस्याओं को देखते हुए कठोर कदम उठाने जा रही है। हाल ही में अमेरिका के स्वास्थ्य मंत्री बने रॉबर्ट एफ केनेडी ने कहा कि फास्ट फूड को वे बच्चों के लंच बॉक्स से हटा देंगे। पिज्जा, बर्गर जैसे खाद्य पदार्थों को उन्होंने पहले भी कई बार जहर बताया है।

जी-20 शिखर सम्मेलन सम्पन्न

भारतीय प्रधानमंत्री का वैदिक मंत्रों से स्वागत, भारत के आयोजन को बताया अब तक सबसे अच्छा

बीती 18-19 नवम्बर के मध्य ब्राजील की राजधानी रियो डी जेनेरियो में जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन सम्पन्न हुआ। यह 19वां आयोजन था। भारत का प्रतिनिधित्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया जिनका वहां पहुँचने पर स्वागत वैदिक मंत्रों और जय श्रीकृष्ण घोष के साथ स्वागत हुआ। ब्राजील चैंबर ऑफ कॉमर्स के कार्यकारी निदेशक लियोनार्डो अनांडा गोम्स का कहना था कि हम कोशिश कर रहे हैं कि भारत जैसा ही आयोजन करें, जो अभी तक का सबसे बेहतर आयोजन था। इससे पूर्व वर्ष 2023 में 'एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य' थीम पर दिल्ली में जी-20 का आयोजन हुआ था।

नाइजीरिया, गुयाना, डोमिनिका तथा बारबाडोस के सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किए गए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को बीती 17 नवम्बर को नाइजीरिया के सर्वोच्च सम्मान 'ग्रेट कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द नाइजर' अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान पाने वाले वह पहले भारतीय हैं। सम्मान स्वरूप उन्हें नाइजीरिया की राजधानी अबूजा की चाबी सौंपी गई। चाबी सौंपना नाइजीरिया वासियों के सम्मान व विश्वास का प्रतीक है। इससे पूर्व महारानी एलिजाबेथ को यह सम्मान प्रदान किया गया था। सम्मान प्राप्त करने के बाद उन्होंने कहा कि भारतीय किसी भी देश में रहे, अपने संस्कारों को नहीं भूलते हैं। भारतीय कंपनियां नाइजीरिया की अर्थव्यवस्था को ताकत दे रही हैं, यही भारतीयों की बड़ी सफलता है। नाइजीरिया पिछले 6 दशकों से अधिक समय से भारत का करीबी साझेदार रहा है।

गुयाना, डोमिनिका व बारबाडोस (कैरेबियाई राष्ट्र) ने भी अपने देश के सर्वोच्च सम्मान से भारत के प्रधानमंत्री को नवाजा है। इससे पूर्व भी विश्व के अनेक देशों ने अपने सर्वोच्च सम्मान से श्री मोदी को सम्मानित किया है जो भारतीयों के लिए गर्व का विषय है।

भूम्यामलकी (भुई आंवला)

■ प्रो. (डॉ.) गोविन्द सहाय शुक्ल

परिचय- यह शाखा प्रशाखायुक्त क्षुप (झाड़ी जैसा पौधा) 1-3 फुट ऊँचा होता है। पुष्प छोटे व पीतवर्ण होते हैं। फल आंवले से काफी छोटे परंतु आँवले के सदृश गोलाकार होते हैं। पत्ते आँवले के पत्तों की तरह किन्तु कुछ चौड़े होते हैं यह वर्षा ऋतु में उत्पन्न होता है तथा जलीय एवं नमी वाले क्षेत्र में वर्षभर पाया जाता है। इसका रस कड़वा होता हैं और यह शीत गुणवाला औषधीय पौधा हैं।

प्रयोग-

1. भुई आंवला के पूरे पंचांग (जड़, तना, फल, पत्ते व फूल सहित यानी जड़ सहित संपूर्ण पौधा) का क्वाथ (काढ़ा) बनाकर 20 से 30 मिली सुबह-शाम खाली पेट मौसमी बुखार, मलेरिया, बार-बार बुखार आने की समस्या व ठण्ड लगकर बुखार आने पर प्रयोग करें ।

2. मूत्र मार्ग के विकार एवं मूत्र जलन होने पर इसके पंचांग को पानी में उबालकर, छानकर ठंडा होने पर 20 से 30 मिली की मात्रा में सुबह-शाम खाली पेट प्रयोग करने पर लाभ मिलता हैं ।

3. यकृत विकार,प्लीहा वृद्धि, पीलिया में इसके चूर्ण को 3 से 5 ग्राम की मात्रा में पानी के साथ सुबह-शाम खाली पेट प्रयोग करना अति लाभदायक होता है।

4. मासिक धर्म में अधिक रक्तस्राव होने पर भुई आंवला के बीज 2 ग्राम या पंचांग पीसकर ठण्डाई की तरह पीवें।

5. जुकाम, श्वास व कास में इसका चूर्ण 2-3 ग्राम की मात्रा में या क्वाथ रूप में 10-20 मिली की मात्रा में दिन में 2 बार खाली पेट इसका सेवन करें।

6. 5 ग्राम पंचांग एवं 3 नग काली मिर्च का प्रयोग सुबह खाली पेट लेने पर मधमेुह रोग में लाभ मिलता हैं । (इसका प्रयोग प्रति माह 7 दिन तक ही करें)

7. पाचन संस्थान से सम्बन्धित विकारों में इसके 2-3 ग्राम पंचांग चूर्ण का प्रयोग खाली पेट करने पर अवश्य लाभ मिलता हैं।

8. रक्त विकार, त्वचा रोग, मुंहासे, कील आदि में इसके 3 ग्राम पंचांग चूर्ण का प्रयोग खाली पेट करें।

9. कोलेस्ट्रोल बढ़ने पर इसके 3-5 ग्राम पंचांग चूर्ण का प्रयोग सुबह खाली पेट करने पर अवश्य लाभ मिलता है।

10. त्वचा के रोगों में भुई आंवला के पत्तों को नमक के साथ पीस कर बांधने पर लाभ मिलता हैं ।

(विशेष- रोग की गंभीर अवस्था में अथवा अधिक दिनों तक प्रयोग करने की स्थिति में कृपया वैद्यकीय सलाह लेवें। पौधों की पहचान भी किसी जानकार से करावें)

(विभागाध्यक्ष, रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना विभाग, पीजीआईए, जोधपुर)

प्रसिद्ध शिक्षाविद् दीनानाथ बत्रा का निधन

महान शिक्षाविद् श्री दीनानाथ बत्रा का गत 7 नवम्बर को नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 94 वर्ष के थे। बत्रा जी 'शिक्षा बचाओ आंदोलन' के राष्ट्रीय संयोजक एवं 'शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास' के संस्थापक व अध्यक्ष रहे। अपना सर्वस्व शिक्षा को समर्पित करने वाले दीनानाथ जी का जन्म 5 मार्च, 1930 को अविभाजित भारत के राजनपुर जिला डेरा गाजी खान (पाकिस्तान)में हुआ था। 1955 में डीएवी विद्यालय डेरा बस्सी, पंजाब से शिक्षकीय जीवन का आरंभ करने वाले बत्रा जी ने 1965 से 1990 तक कुरुक्षेत्र के विद्या भारती संचालित विद्यालय में प्राचार्य पद का दायित्व निभाया। वे अ.भा. हिंदुस्तान स्काउट एंड गाइड के अध्यक्ष तथा विद्या भारती अ.भा. शिक्षण संस्था के महामंत्री भी रहे।

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित श्री बत्रा को अनेक संस्थाओं ने उनके शैक्षणिक कार्य के प्रति समर्पण के लिए पुरस्कृत किया। स्वामी कृष्णानंद सरस्वती सम्मान, स्वामी अखंडानंद सरस्वती सम्मान, भाऊराव देवरस सम्मान जैसे अनेक सम्मानों से अलंकृत बत्रा जी ने शिक्षा में भारतीयता स्थापित करने के अपने संकल्प को एक देशव्यापी आंदोलन बना दिया, जिसका परिणाम है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारत केंद्रित शिक्षा का आधार बनाया गया है।

संघ के वरिष्ठ प्रचारक प्रद्युम्न कुमार नहीं रहे

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री प्रद्युम्न कुमार शर्मा का दिल्ली में बीती 19 नवम्बर को हृदयाघात से निधन हो गया। वे 74 वर्ष के थे।

श्री प्रद्युम्न कुमार सादुलशहर (श्रीगंगानगर) के मूल निवासी थे। वर्ष 1971 में संघ प्रचारक के रूप में आपने श्रीगंगानगर, बीकानेर, नोहर, सुजानगढ़, डीडवाना, पाली, नाथद्वारा, जालोर व सिरोही में संघ कार्य को व्यापकता दी। 1989 में आपको सीमाजन कल्याण समिति, बीकानेर संभाग का दायित्व तथा 1991 में संघ योजना से आपको भाजपा में बीकानेर संभाग का संगठन मंत्री बनाकर भेजा गया। तत्पश्चात् भाजपा में रहते हुए आपने कई प्रदेशों हरियाणा, उत्तर प्रदेश के कुछ संभागों में संगठन मंत्री के नाते संगठन का कार्य देखा। वर्तमान में आप 2020 से भाजपा के राष्ट्रीय संगठक का कार्य देख रहे थे। आपका केन्द्र दिल्ली था।

वेद विज्ञान के विद्वान प्रो.दयानन्द भार्गव का निधन

वयोवृद्ध मनीषी एवं चिंतक प्रो.दयानन्द भार्गव का बीती 22 अक्टूबर को जयपुर में निधन हो गया। वे 87 वर्ष के थे। प्रो. भार्गव पिछले तीन माह से अस्वस्थ चल रहे थे। वेद विज्ञान विश्वकोश, वेदांत व जैन दर्शन पर शोध पत्रों तथा संस्कृत के दुर्लभ विषयों पर आपके कई ग्रंथों का प्रकाशन हुआ। संस्कृत के मूर्धन्य रचनाकार प्रो. भार्गव को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रपति सम्मान और राजस्थान सरकार द्वारा अतुलनीय साहित्य सेवा हेतु संस्कृत साधना शिखर सम्मान से अलंकृत किया गया। जोधपुर, दिल्ली, जम्मू व इलाहाबाद के उच्च शिक्षा संस्थानों में आपने अपनी सेवाएं दीं। आप जयपुर स्थित जगद्गुरु रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की मधुसूदन ओझा पीठ के अध्यक्ष भी रहे। पाथेय कण का रजत जयंती वर्ष (2009-10) आपकी अध्यक्षता में ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
(16 से 31 दिसम्बर, 2024)
(पौष कृष्ण 1 से पौष शुक्ल 1 तक)

जन्म दिवस

पौष कृष्ण 7 (22 दिस.)- श्री मां शारदा
22 दिस.(1887)- गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन
25 दिस.(1924)- अटल बिहारी वाजपेयी
25 दिस.(1861)- पं. मदन मोहन मालवीय
पौष कृ.10 (25 दिस.)- 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ
पौष कृ.11 (26 दिस.)- 8वें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ
26 दिस.(1913)- बाला साहब देशपाण्डे
27 दिस.(1900)- क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ बख्शी
30 दिस.(1880)- पं.अम्बिका प्रसाद वाजपेयी
30 दिस.(1879)- महर्षि रमण
31 दिस.(1926)- श्रमिक हितैषी रमणभाई शाह

बलिदान दिवस / पुण्यतिथि

17 दिस.(1927)- राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी का बलिदान
19 दिस.(1927)- पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ व ठाकुर रोशन सिंह का बलिदान
20 दिस.(1956)- संत गाडगे महाराज की पुण्यतिथि
23 दिस.(1926)- स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान
25 दिस.(1763)- महाराजा सूरजमल की पुण्यतिथि
28 दिस.(1859)- राव रामबक्श सिंह को फांसी
30 दिस.(1862)- क्रांतिकारी उक्यांग नागवा का बलिदान (मेघालय)

महत्वपूर्ण घटनाएं / अवसर

17 दिस.(1928)-क्रांतिकारियों ने लाला लाजपत राय पर लाठी बरसाने वाले साण्डर्स को मृत्युदण्ड दिया
19 दिस.(1961)- गोवा की मुक्ति
23 दिस.(1912)- लार्ड हार्डिंग्ज का बम धमाके से स्वागत

पंचांग- मार्गशीर्ष (शुक्ल पक्ष)
2 से 15 दिसम्बर, 2024 तक

विनायक चतुर्थी व्रत- 5 दिसम्बर, **पंचक प्रारम्भ**- 6 दिसम्बर (प्रात: 5: 07 बजे से), **मोक्षदा एकादशी व्रत (गीता जयंती)**-11 दिसम्बर, **पंचक समाप्त** -11 दिसम्बर (प्रात: 11:48 तक), **प्रदोष व्रत**- 13 दिसम्बर, **रोहिणी व्रत (जैन)**-14 दिसम्बर, **सत्यव्रत (पूर्णिमा)**- 15 दिसम्बर

ग्रह स्थिति : चन्द्रमा : 2 दिसम्बर को नीच की राशि **वृश्चिक** में, 3-4 दिसम्बर को **धनु** राशि में, 5-6 दिसम्बर को **मकर** राशि में, 7 से 9 दिसम्बर **कुंभ** राशि में, 10-11 दिसम्बर को **मीन** राशि में 12-13 दिसम्बर को **मेष** राशि में तथा 14-15 दिसम्बर को उच्च की राशि **वृष** में स्थित रहेंगे।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में **वक्री गुरु** यथावत वृष राशि में व **शनि** देव कुंभ राशि में रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** और **केतु** भी मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। वक्री **बुध** व **सूर्य** पूर्ववत वृश्चिक राशि में स्थित रहेंगे। **मंगल** कर्क राशि में रहते हुए 6 दिसम्बर को प्रात: 5:05 बजे वक्री होंगे। **शुक्र** 2 दिसम्बर को प्रात: 11:57 बजे धनु से मकर राशि में प्रवेश करेंगे।

प्राचीन समृद्धशाली नगर हम्पी

तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित हम्पी मध्यकालीन हिन्दू राज्य विजयनगर साम्राज्य की राजधानी रहा। एक समय हम्पी रोम से अधिक समृद्धशाली नगर होता था। मंदिर, महल, तहखाने, जल खंडहर, पुराने बाजार, शाही मंडप, गढ़, चबूतरे सहित 500 से अधिक स्मारक अवशेषों को देखकर जाना जा सकता है कि यह नगर कितना भव्य और समृद्धशाली रहा होगा।

यहां के मंदिरों की खूबसूरत शृंखला के कारण इसे मंदिरों का शहर भी कहा जाता है। भगवान शिव को समर्पित विरूपाक्ष मंदिर हम्पी के सबसे प्रतिष्ठित मंदिरों में से एक है। यहां हजारों की संख्या में श्रद्धालु व पर्यटक आते हैं। कर्नाटक राज्य में स्थित यह नगर यूनेस्को के विश्व विरासत स्थल सूची में (1986) शामिल है।

प्रतापी राजा कृष्णदेव राय ने 1509 से 1529 तक यहाँ शासन किया। विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत वर्तमान के कर्नाटक, महाराष्ट्र व आंध्रप्रदेश राज्य का क्षेत्र आता था।

कृष्णदेव राय के बाद इस विशाल साम्राज्य को बीदर, बीजापुर, गोलकुण्डा, अहमदनगर और बरार की मुस्लिम सेनाओं ने हमला कर नष्ट कर दिया था।

आओ संस्कृत सीखें-47

- **मैं संस्कृत थोड़ी जानता हूँ।**
  अहं संस्कृत किंचित् जानामि।

दिवस

विजय दिवस : 16 दिसम्बर

राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस : 24 दिसम्बर

वीर बाल दिवस : 26 दिसम्बर

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?- 1.कंबोडिया 2.भानु अथैया 3.महाभारत की 4.सरोजिनी नायडू 5.पिनाक 6.ब्राजील 7.गोदावरी 8.आईएनएस अरिहंत 9.महाकवि दंडी 10.जसोल (बालोतरा)

16 वर्ष की उम्र से पहले सोशल मीडिया के प्रयोग पर रोक की तैयारी

बच्चों के मानसिक व सामाजिक जीवन का ध्यान रखते हुए ऑस्ट्रेलिया सरकार द्वारा जल्दी ही एक कानून लाने पर सहमति बनी है। कानून के अनुसार 16 साल की उम्र से पहले बच्चे सोशल मीडिया का प्रयोग नहीं कर सकेंगे। माता-पिता की सहमति के बाद भी इसमें कोई छूट नहीं होगी। फ्रांस में अभी 15 साल से कम उम्र के बच्चों को सोशल मीडिया का उपयोग करने के लिए माता-पिता की अनुमति आवश्यक है। जबकि चीन में स्क्रीन टाइम को लेकर सख्त नियम है।

घरेलू नुस्खा

- रोजाना खाली पेट किशमिश खाने से आंतों में जमा गंदगी साफ होती है। इससे अपच और गैस की समस्या भी नहीं होती है।

कुकिंग / किचन टिप्स

- गैस के बर्नर को साफ करने के लिए एक कटोरी गर्म पानी में नींबू के रस की कुछ बूंदें व एक पैकेट ईनो का डालें। 15 मिनट तक बर्नर को इसमें ढक कर रख दें। बर्नर को ब्रश से साफ करें चमक उठेगा।

गीता- दर्शन

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कमिश्चन्मां वेत्ति तत्त्वतः।

श्रीकृष्ण कहते हैं, हे अर्जुन! हजारों मनुष्यों में कोई एक मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करता है और उस यत्न करने वाले योगियों में भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्व से अर्थात् यथार्थ रूप से जानता है। *(7/3)*

चुप संख्या ज्ञात करो

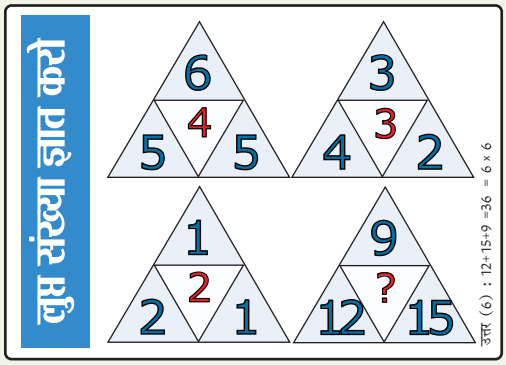

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. भगवान विष्णु का सबसे बड़ा मंदिर 'अंकोरवाट' किस देश में है?
2. ऑस्कर पुरस्कार जीतने वाली पहली महिला भारतीय कौन है?
3. छत्तीसगढ़ की पंडवानी में किन प्राचीन कथाओं का गायन होता है?
4. भारत की पहली महिला राज्यपाल कौन थीं?
5. माता सीता के स्वयंवर में रखे गये शिव धनुष का नाम बताइए?
6. जी-20 शिखर सम्मेलन 2024 का आयोजन किस देश में हुआ?
7. भारतीय नदियों में 'दक्षिण की गंगा' किसे कहा जाता है?
8. भारत की पहली परमाणु पनडुब्बी का नाम क्या है?
9. 'दशकुमार चरितम्' की रचना संस्कृत में किस विद्वान द्वारा की गई है?
10. 'रानी भटियाणी' का मेला राजस्थान में कहाँ आयोजित होता है?

कथा

कर्तव्य

संत के प्रवचनों को सुनने के बाद एक सेठ ने निराशा का भाव लिए उनसे कहा, ''गुरुवर मैने एक-एक पैसे जोड़कर अपने इकलौते पुत्र के लिए अथाह संपत्ति जुटाई। मगर वह गाढ़े पसीने की इस कमाई को बड़ी बेदर्दी के साथ बुरे व्यसनों में लुटा रहा है। मैं बहुत उलझन में हूं।''

संत ने मुस्करा कर कहा, ''सेठ जी तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए कितनी संपत्ति छोड़ी थी?'' सेठ बोला,''वह तो बहुत ही गरीब थे। उन्होंने मेरे लिए कुछ भी नहीं छोड़ा था।'' संत ने कहा, ''तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं छोड़ा था इसके बावजूद तुम इतने धनवान हो गए। इतना धन जमा करने के बावजूद तुम यह समझ रहे हो कि तुम्हारा बेटा तुम्हारे बाद गरीबी में दिन काटेगा?'' सेठ ने दु:खी मन से कहा,'' आप सच कह रहे हैं परन्तु मुझसे गलती कहां हुई है जो यह व्यसनों में डूबा रहता है।''

संत ने कहा, '' तुम यह समझ कर धन कमाने में लगे रहे कि अपनी संतान के लिए दौलत का ढेर लगा देना ही एक पिता का कर्तव्य है। इस चक्कर में तुमने अपने बेटे की पढ़ाई और संस्कारों के विकास पर कोई ध्यान नहीं दिया। पिता का पुत्र के प्रति प्रथम कर्तव्य यही है कि वह उसे अच्छे संस्कार दे। बाकी तो सब कुछ अपनी योग्यता के बलबूते पर वह हासिल कर ही लेगा। ''

संत की वाणी से सेठ की आंखें खुल गई और उसने अपने बेटे को सही रास्ते पर लाने का निश्चय किया।

वर्ग पहेली

राजस्थान की प्रसिद्ध झीलों के नाम खोजिए

पं	रा	ज	स	मं	द	न	क्की
फ	च	ज	य	स	मं	द	आ
ते	सां	भ	र	डी	ड	वा	ना
ह	पु	पि	द्रा	चू	ल	ट	सा
सा	ष्क	छो	मा	प	र	ष	ग
ग	र	ला	को	ला	य	त	र
र	लू	ण	क	र	ण	स	र

सांभर, डीडवाना, पंचभद्रा, लूणकरणसर, जयसमंद, फतेहसागर, पिछोला, राजसमंद, आनासागर, पुष्कर, नक्की, कोलायत

बाल प्रश्नोत्तरी - 66

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल मित्रों, 16 सितम्बर का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - **20 दिसम्बर, 2024**

1. असम के किस स्थान पर लाचित बोरफूकन का जन्म हुआ था?
(क) रंगधर (ख) तलातलघर (ग) चराईदेऊ (घ) खासपुर

2. संघ की समन्वय बैठक पिछले दिनों कहाँ आयोजित हुई?
(क) केरल (ख) तमिलनाडु (ग) कर्नाटक (घ)महाराष्ट्र

3. पेड़ों की रक्षार्थ अमृत देवी विश्नोई का बलिदान किस वर्ष में हुआ था?
(क) 1736 (ख) 1738 (ग) 1731 (घ) 1730

4. पेरिस पैरालंपिक में भारतीय खिलाड़ियों ने कुल कितने मैच जीते?
(क) 29 (ख) 25 (ग) 28 (घ) 22

5. किस देश ने गाय के गोबर से जहाज उड़ाने का परीक्षण किया है?
(क) जर्मनी (ख) जापान (ग) रूस (घ) अमेरिका

6. माता सावित्री के पति का नाम बताइए?
(क) सत्यवान (ख) सत्यमूर्ति (ग) सत्यप्रकाश (घ) सत्यनारायण

7. मदरसे से चल रहा जाली नोटों का कारखाना उ.प्र. के किस स्थान पर पकड़ा गया है?
(क) वाराणसी (ख) प्रयागराज (ग) कानपुर (घ) सहारनपुर

8. पूज्य राघवाचार्य जी किस पीठ के पीठाधीश्वर थे?
(क) गलता पीठ (ख) रेवासा पीठ (ग) गोवर्धन पीठ (घ) रामगिरि पीठ

9. पाण्डवों द्वारा बसाया गया 'इंद्रप्रस्थ' का वर्तमान नाम क्या है?
(क) दिल्ली (ख) मध्यप्रदेश (ग) हरियाणा (घ) उत्तर प्रदेश

10. इटली के एक शहर की मेयर ने किस खेल पर प्रतिबंध लगाया है?
(क) फुटबॉल (ख) क्रिकेट (ग) शतरंज (घ) बैडमिंटन

सही रास्ता खोजिए

बाल प्रश्नोत्तरी-64 के परिणाम

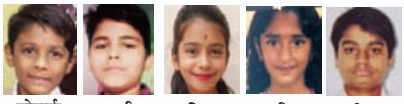

मोनार्क जयदीप निष्ठा मुद्रिका दीपक

1. मोनार्क कुमावत, बैनाड़ रोड़, जयपुर
2. जयदीप गौतम, डिग्गीमालपुरा, टोंक
3. निष्ठा पारीक, परबतसर, डीडवाना
4. मुद्रिका सिंह, मकराना डीडवाना
5. दीपक मीणा, छबड़ा, बारां
6. भरत सैनी, दातारामगढ़, सीकर
7. धैर्य पाराशर, जवाहर नगर, भरतपुर
8. लक्ष्मीका, जड़ाऊकला, नागौर
9. अशोक देवासी, गुड़ामालानी, बाड़मेर
10. सुभाष गुर्जर, किशनगढ़, अजमेर

सही उत्तर
1. (क)
2. (ग)
3. (ख)
4. (क)
5. (क)
6. (ग)
7. (ग)
8. (घ)
9. (क)
10.(क)

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 66)
(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम.....कक्षा.....पिता का नाम.....

उम्र..... पूर्ण पता.....

.....पिन.....मोबाइल.....

RK
GROUP
WONDER
CEMENT
FARQ NAZAR AAYEGA
वंडर सीमेंट
WONDER CEMENT
For BIS Certification details visit :- www.bis.org.in
वंडर लाइए,
फर्क नज़र
आएगा
टोल फ्री नंबर : 1800 31 31 31
वेबसाइट : wondercement.com

Scan for a special
message from
Jasprit Bumrah
JKsuper
cement
JKsuper
STRONG
CONCRETE SPECIAL
BUILD STRONG
Toll Free No.:
1800-266-4606
JKcement
JKsuper STRONG
JKsuper
JKsuper
cement
BUILD STRONG
Toll Free No.:
1800-266-4606
JKcement
JKsuper PROTECT
JKsuper
PROTECT
BUILD STRONG
ALL WEATHER SAFE
JKcement

पाक्षिक
पाथेय कण
01-15 दिसम्बर, 2024
(26 नवम्बर को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

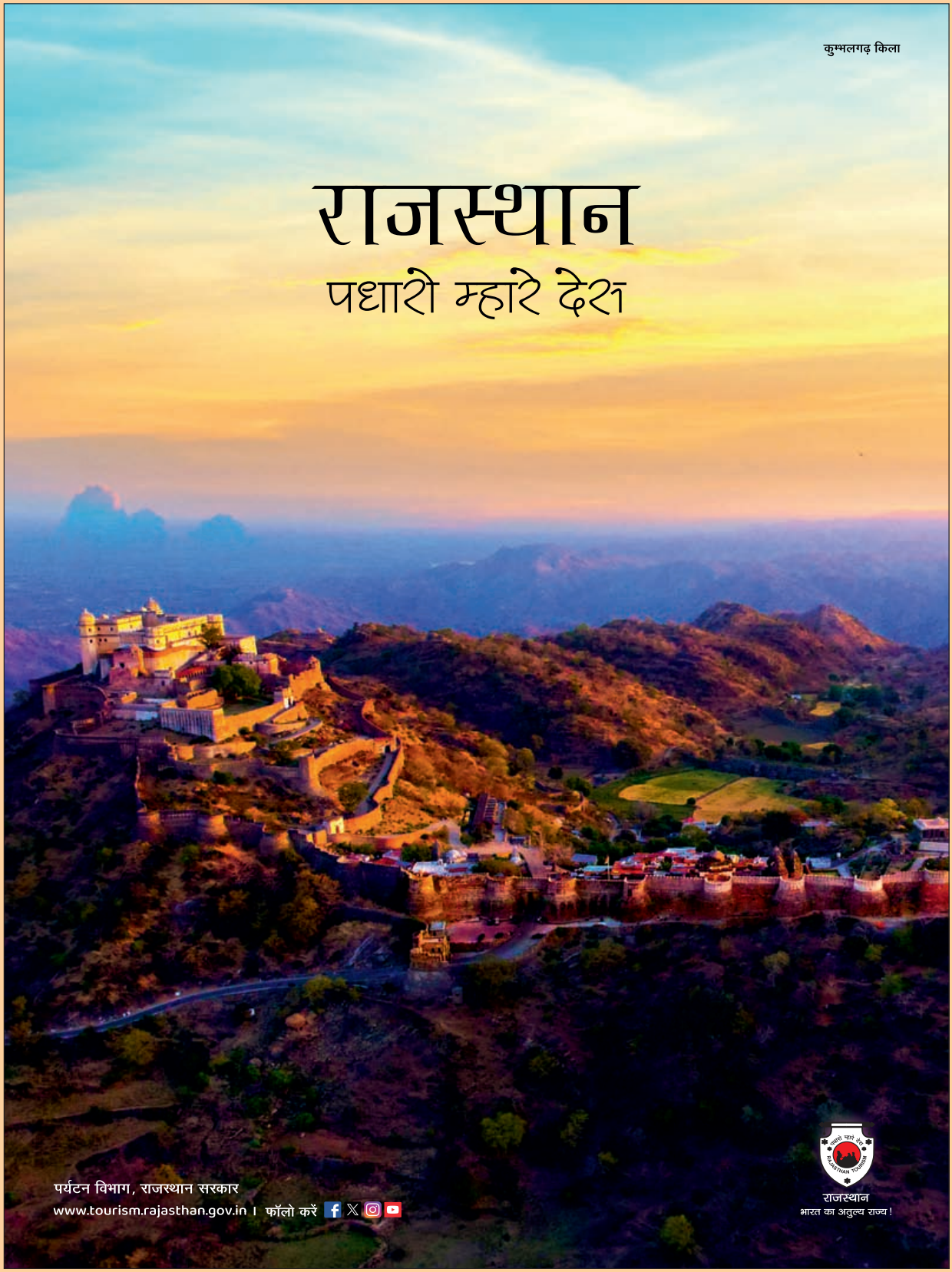

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 दिसम्बर, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,